



21942 - यह हदीस कि "इस्लाम में सैर सपाटा नहीं है" सहीह नहीं है ।

प्रश्न

यह हदीस कि "इस्लाम में सियाहत (यानी सैर सपाटा) नहीं है" कहाँ तक सहीह है ?

विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है ।

हर प्रकार की प्रशंसा और स्तुति केवल अल्लाह के लिए योग्य है ।

एक हदीस में आया है, जिसे अब्दुर्रज़ाक ने अपने मुसन्नफ में लैस से और उन्होंने ने ताऊस से रिवायत किया है कि उन्होंने ने कहा कि अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "...इस्लाम में न तो सैर सपाटा है, न ब्रह्मचर्य है और न ही रहबानियत है ।" अल्बानी ने ज़ईफल जामे हदीस संख्या : 6287 के अंतर्गत फरमाया है कि यह हदीस ज़ईफ़ है ।

बल्कि सही वह हदीस है जिसे अबू दाऊद ने अपनी सुनन में अबू उमामा की हदीस से रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "मेरी उम्मत की सियाहत (सैर सपाटा) अल्लाह के रास्ते में जिहाद है ।" इसे अल्बानी ने सहीहुल जामे हदीस संख्या : 2093 के तहत सहीह कहा है ।

तथा अल्लाह तआला के फरमान :

5 : [التحریم : مُسْلِمَاتٍ مُؤْمِنَاتٍ فَانْتَاتٍ تَائِبَاتٍ عَابِدَاتٍ سَائِحَاتٍ ثَيِّبَاتٍ وَأَبْكَارًا]

"वे (महिलाएँ) मुसलमान, ईमानवाल्याँ, आज्ञापालन करनेवाल्याँ, तौबा करनेवाल्याँ, इबादत करनेवाल्याँ, रोज़े रखनेवाल्याँ, सैयिबा (शादीशुदा औरत जिसका पति न हो) और कुँवारियाँ होंगी ।" (सूरतुत्तह्मीम : 5).

में "साईहात" का अर्थ रोज़ेदार महिलाएँ हैं । तो शरीअत के नुसूस (ग्रंथों) में "सियाहत" का शब्द जिहाद के अर्थ में और रोज़े के अर्थ में आया है । और अल्लाह तआला ही अधिक ज्ञान रखता है ।

इस्लाम प्रश्न और उत्तर